Volume-3, No. I, Feb-2016, pp. 99-100

शैक्षिक प्रबन्धकः एक व्यापक विश्लेषण

श्री जयप्रकाश तिवारी, सहायक प्रोफेसर
शिक्षा संकाय
घनश्याम दूबे पी.जी. कालिज सुरियावां, सन्त रविदास नगर
भदोही उ.प्र. भारत।

सार– शैक्षिक प्रबन्धन शिक्षा का आधुनिक सम्प्रत्य है। इसका सम्बन्ध उस सम्पूर्ण शैक्षिक प्रक्रिया एवं शैक्षिक कार्य से है, जिसमें किसी सत्ताधारी द्वारा सम्पूर्ण शैक्षिक व्यवस्था का व्यापक सर्वेक्षण करके यह निर्णय किया जाता है, कि शैक्षिक विकास की दृष्टि से किस स्तर पर, कैसे, कौनसी, कितनी, और किस रूप में शिक्षा प्रदान की जाय, कि उसका वांछित संख्यात्मक एवं गुणात्मक विकास सुनिश्चित विकास हो सके। वस्तुतः प्रबन्धन स्थानीय स्वायत्ता शासन या राज्य सरकार अथवा केन्द्रीय सरकार का विषय है। अतः कहा जा सकता है कि देश की सामाजिक ,आर्थिक राजनैतिक परिस्थितियों को दृष्टि में रखते हुए उपलब्ध मानवीय एवं भौतिक संसाधनों एवं समाग्री की इस प्रकार अधिकतम उपयोग करने की योजना बनाई जाए,कि निर्धारित समय पर शैक्षिक लक्ष्यों को प्राप्त किया जा सके।

मुख्य शब्दः– वाह्य शैक्षिक प्रबन्धन, आंतरिक शैक्षिक प्रबन्धन, शैक्षिक प्रबन्धन के सम्प्रत्य

ऐतिहासिक रूप से प्रबन्धन प्रक्रिया का जन्म दाता हेनरी फेयॉल (1841–1925) को माना जाता है, जिन्होनें प्रशासन के सन्दर्भ में सर्वप्रथम प्रबन्धकों के प्रशिक्षण प्राप्ति की शुरूआत की , तथा प्रबन्धन की आधारभूत प्रक्रिया एवं कार्यों को परिभाषित किया। शिक्षा के क्षेत्र में शैक्षिक प्रबन्धन का अर्थ कुछ लोग शिक्षा विभाग द्वारा शासकीय नियंत्रण से लगाते है। जबकि कुछ इसे विद्यालय प्रशासन के नाम से सम्बोधित करते है। परन्तु दोनों ही समूह के लोग शैक्षिक प्रबन्धन को संकुचित अर्थ में लेते है। क्योंकि जब हम शिक्षा प्रशासन की बात करते हैं, तो हमारा समस्त ध्यान शिक्षा प्रक्रिया और उसके उद्देश्यों, शिक्षा सम्बन्धित नीतियों और उसके संचालन के ऊपर होता है, और जब हम विद्यालय प्रशासन की बात करते है, तो हमारा समस्त घ्यान किसी शैक्षिक संस्था के प्रबन्ध पर होता है, विद्यालय प्रशासन की बात करते है, तो हमारा ध्यान किसी शैक्षित संस्था के प्रबन्ध पर होता है, सर्वश्री गैन्ड एवं शर्मा ने दोनों के अर्थ एवं अन्तर को स्पष्ट करते हुए लिखा है, कि शिक्षा प्रबन्धन अपना प्रमुख घ्या शिक्षा पर केन्द्रित करता है। जबकि विद्यालय प्रबन्धन किसी विद्यालय के संगठनात्मक पहलू पर केन्द्रित करता है। शिक्षा प्रबन्घन का सम्बन्ध शैक्षिक नीतियों ,शैक्षिक नियोजन, निर्देशन, समन्वय और शैक्षिक कार्यक्रमों के परिनिरीक्षण से है और विद्यालय प्रबन्धन का सम्बन्ध किसी शैक्षिक संस्था की नीतियों उसके संचालन एवं नियंत्रण से है। शैक्षिक प्रबन्धन की प्रकृति विद्यालय प्रबन्धन से अधिक गत्यातमक और व्यापक है। अतः शैक्षिक प्रबन्धन की व्यवस्था को दृष्टि में रखकर कहा जा सकता है, कि शैक्षिक प्रबन्धन के मुख्यतः दो प्रकार होते है।

1. **वाह्य शैक्षिक प्रबन्धन।**
2. **आंतरिक शैक्षिक प्रबन्धन।**

वाह्य शैक्षिक प्रबन्धन– शैक्षिक प्रक्रिया में वाह्य शैक्षिक प्रबन्धन उस प्रभाव एवं आदेश की ओर संकेत करता जो है, जो उच्च स्तर की शक्ति अर्थात केन्द्रीय एवं राज्य सरकारों द्वारा किया जाता है। भारतीय सन्दर्भ में वाह्य प्रबन्ध ही शिक्षा सम्बन्धित नियमों का निर्धारण करता है, पाठ्य पुस्तकों एवं पाठ्यक्रमों का नियोजन करताी है। इसके अतिरिक्त विद्यालय भवनों के निर्माण एवं खेल मैदानों की व्यवस्था में आर्थिक सहायता प्रदान करता है। शिक्षकों एवं कर्मचारियों के चयन वेतन एवं सेवा शर्तो एवं सत्र की अवधि का निर्धारण करता है, और शिक्षा की बेहतरी के लिए समय समय पर दिशा निर्देश देता रहता है।

आंतरिक शैक्षिक प्रबन्धन– से तात्पर्य उस व्यवस्था से है जो किसी विद्यालय के नेता या प्रधानाध्यापक अपने साथियों जैसे– व्यवस्थाप, शिक्षक एवं छात्रों की सहायता से विद्यालय के प्रतिदिन के कार्यक्रम एवं क्रियाओं को सम्यक रूप से संचालित करता है। अतः स्पष्ट रूप से कहां जा सकता है, कि शैक्षिक प्रबन्धन के अर्न्तगत बालक, शिक्षक प्रशासक, प्रबन्धक, प्रधानाध्यापक, अभिभावक, समाज सुधारक एवं राष्ट्र के महान शिक्षाविदों के कार्यों में सामंजस्य एवं समन्वय स्थापित करना होता है। ताकि विद्यालय अपने निर्धारित आर्दशों एवं लक्ष्यों को प्राप्त कर सकें। प्रबन्धन का सम्बन्ध इन मानवीय तत्वों के अतिरिक्त विद्यालय के भौतिक तत्वों जैसे– विद्यालय भवन,

शैक्षिण पाठ्यसामग्री, पाठय पुस्तक को उसकी साज–सज्जा और फर्नीचर आदि से भी है, इस प्रकार कहां जा सकता है कि शैक्षिक प्रबन्धन का सम्बन्ध शैक्ष्झिक प्रकिया को सुचारू रूप से संचालित करने वाली उस व्यवस्था से है। जिसके अर्न्तगत प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष कार्य करने वाले व्यक्तियों के विचारों एवं प्रयासों में सामंजस्य स्थापित किया जाता है जिससे शैक्षिक विकास की अविरल गंगा का प्रवाह बना रहे। इन्साइक्लोपीडिया ऑफ एजूकेशन रिसर्च के अनुसार शैक्षिक प्रबन्धन वह प्रकिया है जिसके द्वारा कार्यकर्ताओं के प्रयासों में समन्वय स्थापित किया जाता है, तथा प्राप्त संसाधनों को इस प्रकार प्रयोग में लाया जाता है कि जिससे मानवीय गुणों का प्रभावशाली ढंग से विकास हो सके। यह प्रकिया केवल बालकों एवं युवाओं के विकास से ही सम्बन्धित नही है बल्कि इसके अन्तर्गत प्रौढों एवं कार्यकर्ताओं के विकास को भी महत्व दिया जाता है।

शैक्षिक प्रबन्धन के सम्प्रत्य के व्यापक विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि इसमें मुख्य निम्न तत्वों समाहित होते है।

1. **शैक्षिक प्रबन्धन एक व्यापक प्रकिया है–** जिसमें शैक्षिक क्रियाओं के नियोजन , संगठन, संचालन, सामन्जस एवं नियंत्रण की प्रकिया समाहित है। इसका सम्बन्ध मानवीय एवं भौतिक दोनों तत्वों से है तथा इसके क्षेत्र के अन्तर्गत आन्तरिक एवं वाह्य दोनों प्रबन्धन आते है।
2. **शैक्षिक प्रबन्धन एक गत्यात्मक प्रकिया है–** जो देश देशान्तर के ऐतिहासिक , राजनैतिक सामाजिक एवं आर्थिक व्यवस्था से प्रभावित होती रहती है, तथा वैज्ञानिक संचार माध्यमों की प्रगति से इसमें क्रान्तिकारी परिवर्तन होता रहता है। जैसे मध्यकालीन शैक्षिक प्रबन्धन जहां एकतन्त्रीय था वही आधुनिक शैक्षिक प्रबन्धन लोकतांत्रिक तथा अधिक विकेन्द्रीकृत है।
3. **शैक्षिक प्रबन्धन कला एवं विज्ञान दोनों है–** शैक्षिक प्रबन्धन कला इसलिए है क्योंकि इसमें कौशल सावधानी एवं विधि आवश्यक है, जबकि विज्ञान इसलिए है कि कुशल प्रबन्धन के लिए मानव स्वभाव , रूचियों एवं समूह मनोविज्ञान का ज्ञान आवश्यक है। अतः श्री के.के. मलैया की यह बात उचित है कि शैक्षिक प्रबन्धन कला एवं विज्ञान दोनों है।
4. **शैक्षिक प्रबन्धन मौलिक रूप में लोकतांत्रिक प्रकिया है–** शैक्षिक प्रबन्धन में लोकतांत्रिक आदर्श जैसे समानता स्वतंत्रता विश्वबन्धुत्व एवं मानवीय उद्देश्य की प्राप्ति के लिए स्वीकार किया जाता है। इसमें बिना किसी वंश, जाति, लिंग आदि का घ्यान दिये सभी को शैक्षिक प्रबन्धन की प्रकिया में शामिल किया जाता है।
5. **शैक्षिक प्रबन्धन मूलतः बाल केन्द्रीत होता है–** शैक्षिक प्रबन्धन व्यापक एवं जटिल प्रकिया है। परन्तु मूल रूप से यह बालक के सर्वागीण विकास से अनिवार्यतः जुडा होता है और शैक्षिक प्रबन्धन की सफलता एवं असफलता बालक की व्यक्तित्व के सर्वागीण विकास से मापी जाती है।
6. **शैक्षिक साध्य न होकर साधन है–** शैक्षिक प्रबन्धन समस्त शैक्षिक उद्देश्य की प्राप्ति में सहायक होता है। विश्व के सन्दर्भ में स्थानीय आवश्यकताओं एवं संसाधनों के आधार पर इसके उद्देश्य को प्राप्त करने का प्रयास किया जाता है। भारतीय संदर्भ में शैक्षिक प्रबन्धन में अल्पकालीन एवं दीर्घकालीन आवश्यकतानुसार गतिशील शैक्षिक प्रबन्धन के सिद्वान्त का प्रयोग किया जाता है। पर्ट (PERT) कार्यक्रम मूल्याकंन एवं पुनरीक्षण तकनीकी एवं नैक (NAAK) नेशनल असेस्मेन्ट एण्ड एक्रीडेशन कौउंसिल जैसी संस्थाएं भारतीय शैक्षिक प्रबन्धन के प्रमुख अंग है।

अन्ततः कहा जा सकता है कि योग्य एवं कुशल शैक्षिक प्रबन्धन की नींव पर ही शिक्षा रूपी विशाल भवन पूरे वैभव के साथ प्रतिष्ठित होता है तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगा।

सन्दर्भ ग्रंथ सूचि–

1. शैक्षिक प्रबन्धनः प्रो. जे.पी. वर्मा
2. शैक्षिक तकनीकी एवं कक्ष प्रबन्धनः डा. श्रीमति संतोष मित्तल
3. तुलनात्मक शिक्षा के सिद्वान्तः डा. आर. पी. सिंह
4. शैक्षिक प्रशासनः प्रो. एल. के. ओड
5. शिक्षा में निर्देशन के आवश्यक तत्वः डा. राधा रानी सक्सेना
6. शिक्षा में अनुसंधान के आवश्यक तत्वः डा. विपिन सिंह रायजादा
7. भारतीय शिक्षा व्यवस्था एवं प्रशासन तंत्रः डा. एल.एल. वर्मा
8. शिक्षा एवं विद्यालय प्रशासनः डा. डी. एन. गैन्ड एवं आर. पी. शर्मा
9. जनरल एण्ड इन्डस्ट्रियल मैनेजमेन्टः हेनरी फेयॉय
10. इन्साइक्लोपीडिया ऑफ एजूकेशन रिसर्च